B-2
L-23
Modern India

रौलेट एक्ट (1919)[1] एवं जलियाँवाला बाग हत्याकांड (1919)[2]

• प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद अंग्रेजों ने यह महसूस किया कि युद्ध की परिस्थितियों में उनका नियंत्रण भारतीय शासन पर कमजोर हो गया था और भारत में राष्ट्रवादी भावनाएं मजबूत होने लगी थी। अतः भारतीय राष्ट्रवाद को कुचलने के लिए रौलेट की अध्यक्षता में एक सेडिशन कमेटी का गठन किया गया, जिसने आतंकवाद अपराध अधिनियम के के तहत यह पारित किया कि देशद्रोह के आरोप में बिना वारंट के भी किसी को भी गिरफ्तार किया जा सकता है और यहां तक कि बिना न्यायालय गए उसे महीनों तक जेल में रखा जा सकता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

• इस कानून को "बिना अपील, बिना दलील व बिना वकील" का कानून कहा गया। स्पष्टतः यह एक लोकतांत्रिक मूल्यों के विरुद्ध ऐसा काला कानून था जो भारतीयों के अधिकारों को सीमित कर रहा था। अतः प्रायः सभी राष्ट्रवादियों ने इस कानून का विरोध किया और गाँधीजी ने इस विषय पर राष्ट्रीय सत्याग्रह का आह्वान किया।

• गांधी की लोकप्रियता को देखते हुए उन्हें गिरफ्तार कर लिया और फिर पंजाब के दो लोकप्रिय नेताओं सतपाल और डा० सैफुद्दीन किचलू को भी गिरफ्तार किए जाने से पंजाब का राजनैतिक वातावरण असंतुष्ट होने लगा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

• इसी बीच 13 अप्रैल को जलियाँवाला बाग में स्थानीय लोग वैसाखी मनाने एकत्र हुए और इन गिरफ्तारियों के विरोध में वहां सभा आयोजित होने लगी। ऐसे में जनरल डायर ने इसे मार्शल लॉ का उल्लंघन मानकर भीड़ पर अंधाधुंध फायरिंग का आदेश दे दिया और विश्व इतिहास की नृसंश हत्याकांड को अंजाम दिया।

• इस हत्याकांड से जुड़ा एक दुःखद पहलू यह भी था कि ब्रिटिश शासन प्रणाली ने न सिर्फ डायर की कार्यवाही का समर्थन किया, बल्कि हाउस आफ लार्ड्स ने उसे सम्मानित भी किया। तत्कालीन भारत सचिव मॉंटेग्यू ने इसे निवारक हत्याकाण्ड कहकर इसका बचाव किया.

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

• जलियाँवाला बाग हत्याकांड और उस पर अंग्रेजों के रुख ने भारतीयों के असंतोष को चरमोत्कर्ष पर ला दिया और गुरुदेव टैगोर ने अपनी नाइटहुड की उपाधि वापस लौटा दी। वस्तुतः इस घटना ने भारतीय राजनीति को एक ऐसे मोड़ पर ला दिया जहाँ से वृहद राष्ट्रीय आंदोलन करना आवश्यक हो गया और गांधी के असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार हो गयी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

खिलाफत आंदोलन (1919-20)

• खिलाफत आंदोलन की पृष्ठभूमि अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों ने निर्मित की थी। स्मरणीय है कि प्रथम विश्वयुद्ध में तुर्की ने मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया था और युद्ध में विजय के बाद ब्रिटेन ने

सेव्रे की संधि से तुर्की पर अपमानजनक शर्तें थोपी और यही विषय भारत में खिलाफत आंदोलन का कारण बना।

- उल्लेखनीय है कि तुर्की के खलीफा को प्रायः सम्पूर्ण मुस्लिम समुदाय अपना धार्मिक गुरु स्वीकारता था। ब्रिटेन के इस निर्णय का सर्वत्र मुस्लिम जगत में विरोध होने लगा और भारत में ब्रिटेन व तुर्की के इस विषय के आधार पर खिलाफत नामक लोकप्रिय आंदोलन आरंभ हो गया।

- इस आंदोलन का नेतृत्व अलीबंधु, हसरत मोहानी, हकीम अजमल खां जैसे व्यक्तित्व कर रहे थे। इन नेतृत्वकर्ताओं ने ब्रिटिश सत्ता का सहयोग न करने और मुसलमानों को सेना में शामिल न होने का आह्वान

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

करते हुए कहा कि, "जब तक तुर्की के अनुकूल शर्तें नहीं बनायी जाती, इस्लामिक विश्वास को पुनर्स्थापित नहीं किया जाता, तब तक सरकार का सहयोग नहीं किया जाएगा।"

- गाँधीजी ने खिलाफत आंदोलन का न सिर्फ समर्थन किया, बल्कि अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन की अध्यक्षता भी की जबकि तिलक व जिन्ना जैसे नेताओं ने यह माना कि यह विषय धार्मिक पक्ष से जुड़ा है अतः इस विषय पर राष्ट्रीय आंदोलन आरंभ करने से राष्ट्रीय संघर्ष का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप प्रभावित होगा और स्वतंत्रता संग्राम के लिए यह उचित नहीं होगा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

गाँधी के खिलाफत आंदोलन के समर्थन का विश्लेषण

• खिलाफत विषय पर जब तिलक व जिन्ना जैसे नेताओं ने राष्ट्रीय आंदोलन आरंभ करने का विरोध किया तो फिर गाँधी ने ऐसा निर्णय क्यों लिया, इसे निम्न-लिखित तर्कों के आधार पर विश्लेषित किया जा सकता है:-

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

1) गाँधीजी ने इसे हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित करने तथा राष्ट्रीय संघर्ष में मुस्लिम सहभागिता सुनिश्चित करने का इसे स्वर्णिम अवसर माना। स्मरणीय है कि 1857 के महाविद्रोह के बाद अंग्रेजों ने "फूट डालो और राज करो" की नीति से भारतीय समाज की महान एकता को खण्डित करने का प्रयास किया और राष्ट्रीय संघर्ष से

मुस्लिम वर्ग प्रतिकर्षित भी होने लगा था।

गांधी ने यह आंकलन किया था कि अंग्रेजों के विरुद्ध व्यापक व प्रभावी जनांदोलन के लिए मुस्लिम वर्ग की सहभागिता आवश्यक है।

b) गाँधीजी इस प्रश्न पर तुर्की के साथ सहानुभूति थी क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने आत्मनिर्णय के आश्वासन से पलटते हुए सेव्रे की संधि के द्वारा तुर्की पर अपमान-जनक शर्तें थोपी थी। गांधी इसे वादाखिलाफी मानते थे।

c) 1919 के दौर में रौलेट एक्ट व जलियाँवाला वाला बाग हत्याकांड के विरुद्ध असंतोष एक वृहद् आंदोलन की माँग कर रहा था अतः राष्ट्रीय आंदोलन की ऊर्जा दो भागों में न बंट जाए इसीलिए गांधी ने बड़ी

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

कुशलता से पंजाब अन्याय की जाँच व खिलाफत संबंधित भूल सुधार के साथ ही 'स्वराज' की मांग को रखकर अखिल भारतीय खिलाफत असहयोग आंदोलन की नींव रख दी। स्पष्टतः यह निर्णय एक व्यापक राष्ट्रीय संघर्ष के उद्देश्य से प्रेरित था।

यद्यपि बाद के दिनों में हमारे राष्ट्रीय संघर्ष में धार्मिक विषयों का जुड़ाव भी देखा जाने लगा और साम्प्रदायिक भावना को बढ़ावा मिला। अतः कुछ आलोचक गांधी के खिलाफत समर्थन को एक भूल मानते हैं किन्तु तात्कालीन परिस्थितियों में गांधी का यह निर्णय उनके व्यक्तित्व, विचार व रणनीति के अनुसार तार्किक व प्रासंगिक साबित होता हैं क्योंकि गांधी के नेतृत्व में ही जनांदोलन व्यापक राष्ट्रीय रूप ले सका और ब्रिटिश सत्ता जनांदोलन की ताकत से वाकिफ हो सकी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

यदि बाद के दिनों में राष्ट्रीय संघर्ष में साम्प्रदायिकता का जुड़ाव दिखा तो उसका मुख्य कारण अंग्रेजों की "फूट डालो और राज करो" की नीति तथा हिन्दू व मुस्लिम साम्प्रदायिक संगठनों की उत्पत्ति व उनकी मांगों में टकराव के कारण हुई।

विशेष:- • खिलाफत का यह प्रश्न शीघ्र ही अप्रासंगिक हो गया क्योंकि मुस्तफा कमालपाशा के नेतृत्व में तुर्की के आधुनिकीकरण के क्रम में धर्मनिरपेक्षता को स्वीकारा गया और खलीफा के पद की समाप्ति की आधिकारिक घोषणा कर दी गयी।

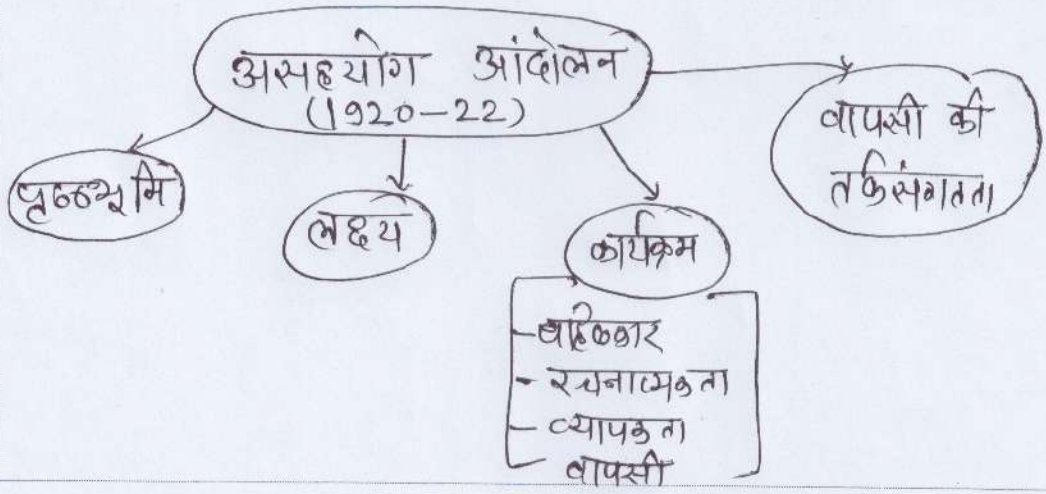

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
© KHAN SIR ©

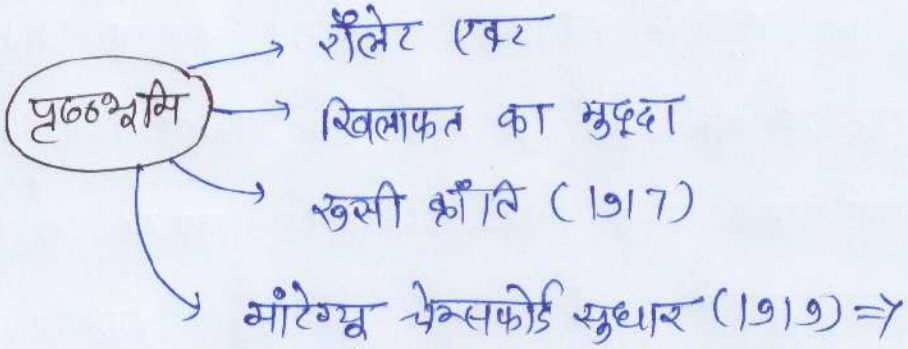

- असहयोग गाँधी के सत्याग्रह की अवधारणा का महत्वपूर्ण अंग है जिसका अर्थ ऐसी सरकार का सहयोग नहीं करना है जो शोषण पर आधारित हो।
- वस्तुतः गांधीजी ने प्रथम विश्वयुद्ध के दौरे में ब्रिटिश सत्ता के सहयोग का निर्णय लिया था और उनका आंकलन था कि विपरीत परिस्थितियों में भारतीयों द्वारा किए गए सहयोग से प्रसन्न होकर सरकार युद्धोपरांत भारतीयों को अधिक अधिकार व रियायतें प्रदान करेगी। इसी संदर्भ में गांधी ने युवाओं को सेना में भर्ती होने का आह्वान किया जिससे लोग उन्हें, "सार्जेन्ट"

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

भी कहने लगे। किन्तु युद्ध के बाद रौलेट एक्ट को लाना तथा जलियाँवाला बाग हत्याकांड व खिलाफत जैसे विषय से असंतुष्ट होकर गांधी ने अपने "कैसर-ए-हिन्द" की उपाधि वापस लौटा दी, जो एक सहयोगी से असहयोगी बनने का प्रतीक था।

- गांधी ने एक वर्ष के भीतर स्वराज का नारा देकर असहयोग आंदोलन आरंभ कर दिया। इस आंदोलन को चार चरणों में बाँटा जा सकता है:-

1. बहिष्कार: गांधी ने प्रायः उन सभी वस्तुओं व चीजों के बहिष्कार का आह्वान किया, जो ब्रिटिश सत्ता से जुड़ी थी। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सरकारी संस्थाओं से जुड़े लोगों को इस्तीफा देना था। वकीलों को वकालत छोड़नी थी और छात्रों को सरकारी स्कूलों का बहिष्कार करना था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

b) असहयोग का सबसे लोकप्रिय कार्यक्रम विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार साबित हुआ और राष्ट्रवादियों ने बहिष्कार से आगे बढ़ते हुए विदेशी वस्तुओं की होली जलाकर सत्ता का विरोध किया। (बहिष्कार कार्यक्रम का यह प्रभाव पड़ा कि 1920-21 में ब्रिटिश माल का आयात 1 अरब, 2 करोड़ रु. था जो 1921-22 में गिरकर 57 करोड़ रु. रह गया)

c) बहिष्कार कार्यक्रम का मूल हिस्सा न होने के बावजूद महिलाओं द्वारा शराब की दुकानों पर विरोध प्रदर्शन इतना प्रभावी साबित हुआ कि गाँधी ने इसे सविनय अवज्ञा आंदोलन के मूल कार्यक्रम का हिस्सा बना लिया।

2. **रचनात्मकता** :- (a) जिन-जिन तत्वों का बहिष्कार किया गया उसमें यह भी ध्यान रखा गया कि बहिष्कार से शून्यता या

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform © KHAN SIR

अराजकता की स्थिति पैदा न हो इसीलिए रचनात्मक कार्यक्रम के द्वारा स्वदेशी निर्माण की पहल की गयी। उदाहरणस्वरूप - यदि छात्रों को सरकारी स्कूलों का बहिष्कार करने के लिए कहा गया तो राष्ट्रीय शिक्षा के प्रसार के लिए काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ व जामिया-मिलिया-इस्लामिया जैसे शिक्षण संस्थानों की स्थापना की गयी और राष्ट्रीय कालेज भी स्थापित हुआ।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

b) राष्ट्रीय शिक्षा का लक्ष्य यह भी था कि नवयुवकों का एक ऐसा वर्ग तैयार हो सके जो भविष्य के राष्ट्रीय संघर्ष का नेतृत्व करें और स्वतंत्र भारत की महत्वाकांक्षा को मजबूत करें। रचनात्मक कार्यक्रमों के अंतर्गत चरखा बाँटना, सूत काटना, अस्पृश्यता उन्मूलन, नारी कल्याण जैसे सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रम भी चलाए गए।